Rishtedari Kaatna Haram Hain (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 441
Weekly Booklet : 441

रिश्तेदारी काटना ह़राम है

(अमीरे अहले सुन्नत का बयान)

(सफ़ह़ात : 20)

रिश्तेदारों के हुक़ूक़ 07

किस की मौजूदगी में रह़मत नहीं उतरती ? 12

रह़मते ख़ुदावन्दी पाने का ज़रीआ 16

सब से बेहतरीन सदक़ा 17

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

रिश्तेदारी काटना ह़राम है

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 20 सफ़ह़ात का रिसाला "रिश्तेदारी काटना ह़राम है" पढ़ या सुन ले उसे अपने रिश्तेदारों के साथ हमेशा अच्छा सुलूक करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और ख़ानदान समेत बे ह़िसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से दिन और रात में मुझ पर तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक पर ह़क़ है कि उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे। (معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज कल जिसे देखो रिश्तेदारियां काटने में लगा हुवा है, कहीं मां बेटे की आपस में ठनी हुई है तो कहीं बहन भाई आपस में लड़ाई झगड़े का शिकार हैं, कहीं मामूं भांजों में नाचाक़ी है तो कहीं चचा भतीजों में नाराज़ी है, अल ग़रज़ हर त़रफ़ ख़ानदानों में नाचाक़ियां फैली हुई हैं। अपने अन्दर सिलए रेह़मी का जज़्बा बढ़ाने और ख़ुद को क़त़ए रेह़मी से बचाने के लिये इ़ब्रत से भरपूर एक ह़िकायत मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे

क़त़ए रेह़मी की सज़ा (ह़िकायत)

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक नेक व सालेह़ अ़जमी शख़्स मेरा दोस्त था और वोह मक्कए मुकर्रमा के पास रहता था, सारी सारी रात काबतुल्लाह

शरीफ़ का त़वाफ़ करता और हमेशा क़ुरआने पाक की तिलावत किया करता था। अ़र्सए दराज़ तक उस का येही मामूल रहा। एक बार मैं ने उसे कुछ सोना बत़ौरे अमानत दिया और ख़ुद यमन चला गया। जब वापस लौटा तो इत्तिफ़ाक़ से उस नेक शख़्स का इन्तिक़ाल हो चुका था लिहाज़ा मैं उस की औलाद के पास पहुंचा और सारा माजरा सुना कर अपनी अमानत की वापसी का मुत़ालबा किया, उन्हों ने जवाब दिया : ख़ुदा की क़सम ! तुम जो कहते हो हमें उस की कुछ ख़बर नहीं और न हमें तुम्हारी अमानत का इ़ल्म है। इस त़रह़ की गुफ़्तगू सुन कर मैं बड़ा परेशान हुवा कि अफ़सोस ! मेरा इतना सारा माल ज़ाएअ़ हो गया। इसी परेशानी के अ़ालम में मेरी मुलाक़ात सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से हुई तो उन्हों ने मुझ पर ग़म के आसार देख कर पूछा : ऐ मेरे भाई ! इतने ग़मगीन और परेशान क्यूं हो ? मैं ने उन्हें अपना सारा माजरा कह सुनाया तो उन्हों ने फ़रमाया : जुमुआ़ को आधी रात के वक़्त मत़ाफ़ (यानी त़वाफ़ की जगह) में कोई न हो तो तुम रुक्न व मक़ाम (यानी रुक्ने यमान और मक़ामे इब्राहीम) के दरमियान खड़े हो कर बा आवाज़े बुलन्द पुकारना, ऐ फ़ुलां ! तो अगर वाक़ेई़ वोह अल्लाह पाक का मक़्बूल व सालेह़ बन्दा हुवा तो उस की रूह़ तुझ से कलाम करेगी।

वोह बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़स्बे इरशाद जुमुआ़ को आधी रात के वक़्त जब मत़ाफ़ ख़ाली हो गया मक़ामे इब्राहीम और रुक्ने यमानी के दरमियान खड़े हो कर बुलन्द आवाज़ से उसे पुकारा लेकिन कोई जवाब न मिला और मैं मायूस हो कर वापस लौट आया। जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को बताया कि मैं ने उसे पुकारा लेकिन मुझे कोई जवाब न मिला। येह सुन कर सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने "اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن" पढ़ा और मुझ से इरशाद फ़रमाया : अफ़सोस ! वोह शख़्स नेक लोगों में से नहीं था लेकिन अब तुम ऐसा करो कि यमन चले जाओ, वहां फ़ुलां मक़ाम पर "बरहूत"

नामी एक कुंवां है जिस में अ़ज़ाब दिये जाने वालों की रूहें जमा होती हैं और वोह कुंवां जहन्नम के मुंह पर है, तुम आधी रात के वक़्त उस कुंएं के किनारे खड़े हो कर उसे यूं पुकारना : ऐ फ़ुलां की रूह़ ! तो उस की रूह़ तुझ से कलाम करेगी।

वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने यमन का सफ़र इख़्तियार किया और आधी रात के वक़्त "बरहूत" नामी कुंएं के पास जा कर बैठ गया, वहां मैं ने देखा कि दो शख़्सों को ला कर उस कुंएं में उतारा गया, दोनों रो रहे थे, एक ने दूसरे से पूछा : तू कौन है ? दूसरे ने जवाब दिया : मैं उस ज़ालिम शख़्स की रूह़ हूं जो दुनिया में बादशाह का पहरेदार था और ह़राम खाता था, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे इस कुंएं में फेंक दिया और अब मुझे अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा। दूसरे ने कहा : मैं अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान की रूह़ हूं जो नाफ़रमान और ज़ालिम शख़्स था और अब मुझे इस कुंएं में अ़ज़ाब देने के लिये लाया गया है। जब मैं ने उन दोनों की चीख़ो पुकार सुनी तो घबराहट की शिद्दत से मेरे बदन के रोंगटे खड़े हो गए फिर मैं ने उस कुंएं में झांक कर बुलन्द आवाज़ से पुकारा : ऐ फ़ुलां ! तो उस शख़्स की आवाज़ आई : "लब्बैक" (यानी मैं ह़ाज़िर हूं) और वोह इस ह़ालत में था कि उसे अ़ज़ाब देते हुए मारा पीटा जा रहा था। मैं ने उस से पूछा : ऐ मेरे भाई ! वोह अमानत कहां है जो मैं ने तेरे पास रखवाई थी ? उस ने जवाब दिया : वोह अमानत फ़ुलां जगह फ़ुलां ज़ीने के नीचे मदफ़ून है। फिर मैं ने पूछा : ऐ मेरे भाई ! किस गुनाह के सबब तुझे बदबख़्तों के मक़ाम पर लाया गया ? उस ने जवाब दिया : मेरी बहन के सबब, इस लिये कि मेरी एक ग़रीब बहन मुझ से कहीं दूर सरज़मीने अ़जम पर रहती थी, मैं उस की परवाह किये बग़ैर अल्लाह पाक की इ़बादत में मश्ग़ूल हो गया था और मक्कए मुकर्रमा में रहने लगा था और उस मुद्दत में न मुझे उस की कोई फ़िक्र हुई और न मैं ने उस के बारे में (किसी आने वाले से) कुछ पूछा।

जब मेरा इन्तिक़ाल हुवा तो अल्लाह पाक ने मेरी पकड़ फ़रमाई और मुझ से इरशाद फ़रमाया : तू कैसे अपनी बहन को भूल गया ह़ालांकि उस के पास कपड़े नहीं थे जब कि तू कपड़े पहने हुए ज़िन्दगी गुज़ारता रहा, वोह भूकी रही और तू पेट भर के खाता रहा, वोह प्यासी रही और तू सैराब होता रहा। मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं रिश्तेदारियां काटने वालों पर रह़म नहीं करूंगा, फिर अल्लाह पाक ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि इसे ले जाओ और "बरहूत" नामी कुंएं में डाल दो। मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझे इस कुंएं में डाल दिया है और अब मुझे यहां बड़ा सख़्त अ़ज़ाब दिया जा रहा है। ऐ भाई ! तुम मेरी बहन के पास जा कर मेरे लिये मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त करना, अगर वोह मुआ़फ़ कर देगी तो शायद मेरे लिये अ़ज़ाब से छुटकारे की सूरत हो जाए क्यूंकि अल्लाह पाक के हां क़त़्ए रेह़मी के इ़लावा कोई और गुनाह मेरे ज़िम्मे नहीं है। (यानी वोह वाक़ेई़ नेक आदमी था बस उस से येह भूल हो गई थी कि वोह अपनी बहन से बिगाड़ बैठा था)

वोह बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं उस के बताए हुए पते के मुत़ाबिक़ उस जगह गया जहां अमानत दफ़्न थी, वहां ज़मीन खोद कर मैं ने अपनी अमानत ह़ासिल की फिर उस की बहन के पास पहुंचा और उसे अव्वल ता आख़िर सारा माजरा कह सुनाया तो वोह रोने लगी फिर मैं ने उस के भाई के छुटकारे के लिये उस से कहा तो वोह अल्लाह पाक की बारगाह में मोह़ताजी का अ़र्ज़ करने लगी, मैं ने कुछ दुनियावी माल उसे दिया और वहां से लौट आया। पस हर मोमिन को चाहिए कि सिलए रेह़मी इख़्तियार करे। (قرۃ العیون مع روض الفائق، ص401)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए से हमें येह दर्से इ़ब्रत मिलता है कि आदमी ख़्वाह कितना ही परहेज़गार, नेकोकार, अमानतदार और दियानतदार क्यूं न हो अगर वोह बिला वज्ह मां बाप या बहन भाई से बिगाड़ कर रखता और उन पर ज़ुल्म करता हो या ख़ाला, मामूं, चचा, दादा, दादी, नाना, नानी

वग़ैरा रिश्तेदारों से क़त़ए रेह़मी से पेश आता हो तो उस का अन्जाम बहुत ख़ौफ़नाक हो सकता है। आज कल किसी की अपनी मां से नहीं बनती तो किसी की बाप से, कोई अपनी बहन से बिगाड़ कर बैठा है तो कोई भाई से, कोई ख़ाला और मामूं से लड़ झगड़ कर बैठा है तो कोई चचा से, अल ग़रज़ बहुत से लोग क़त़ए रेह़मी का शिकार हैं। हां ! अगर किसी जाइज़ वज्ह से आपस में नाराज़ी है तो उस में कोई ह़रज नहीं मसलन मां बाप इस लिये बेटे से नाराज़ हैं कि दाढ़ी क्यूं रखी है ? तो ऐसी सूरत में चाहे मां बाप नाराज़ हों उन की नाजाइज़ डिमान्ड पूरी नहीं की जाएगी।

याद रखिये ! जहां अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म मौजूद हो वहां उस के मुक़ाबले में वालिदैन का हुक्म नहीं माना जाएगा। अल्लाह पाक ने हमें अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का हुक्म दिया है और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है : मूंछें ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो, यहूदियों की सी सूरत न बनाओ। (مسلم، ص125، حدیث:602-603ملتقطاً) देखिये ! जब दाढ़ी रखने के ह़वाले से अल्लाह पाक के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वाज़ेह़ हुक्म मौजूद है तो अब मां बाप से पूछने की ह़ाजत नहीं। हां ! जहां शरीअ़त ने मां बाप से पूछने की इजाज़त दी है वहां उन से पूछ लिया जाए मसलन नफ़्ली ह़ज या उ़मरह करने के लिये जाना हो तो वालिदैन से पूछ लिया जाए अगर वोह मना करें तो रुक जाएं। येह मस्अला भी ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि अगर किसी पर ह़ज फ़र्ज़ हो जाए तो अगर्चे मां बाप इजाज़त न दें तब भी ह़ज करना होगा। (फ़तावा रज़विय्या, 10 / 658) और अगर वालिदैन के मना करने की वज्ह से कोई फ़र्ज़ ह़ज की अदाएगी से रुक गया तो वोह गुनाहगार होगा। बहरह़ाल शरीअ़त के हुक्म के मुक़ाबले में वालिदैन और रिश्तेदारों का हुक्म नहीं माना जाएगा अलबत्ता अगर वालिदैन शरीअ़त के दाइरे में रहते हुए कोई हुक्म दें तो

उन की ना फ़रमानी बहुत सख़्त गुनाह है और मां बाप को सताने वालों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाबात की वई़दें हैं, चुनान्चे

आग की शाख़ों से लटके हुए लोग

सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेराज की रात एक मन्ज़र येह भी देखा कि कुछ लोग आग की शाख़ों से लटके हुए थे। अ़र्ज़ की गई : येह मां बाप को गालियां बकते थे। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، 2/139 ملتقطاً)

वालिदैन की रिज़ा के बग़ैर अ़ज़ाब दूर न होगा

एक रिवायत में है कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : मैं उस वक़्त तक वालिदैन के नाफ़रमानों से अ़ज़ाब दूर नहीं करूंगा जब तक कि उन के वालिदैन ख़ुद उन्हें मुआ़फ़ नहीं करेंगे और मुझे मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं वालिदैन की दिली रिज़ामन्दी के बग़ैर उन की औलाद को जहन्नम से नहीं निकालूंगा।

(قرۃ العیون مع روض الفائق، ص403 ملتقطاً)

वालिदैन का नाफ़रमान ग़ज़बे इलाही का शिकार

एक और रिवायत में है : वालिदैन का ना फ़रमान अगर्चे रोज़ा रखे और नमाज़ पढ़े अगर वोह इस ह़ाल में मरा कि वालिदैन उस से नाराज़ थे तो वोह अल्लाह पाक से इस ह़ाल में मुलाक़ात करेगा कि अल्लाह पाक उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा। (قرۃ العیون مع روض الفائق، ص403 ملتقطاً)

वालिदैन से ह़ुस्ने अख़्लाक़ का ह़ुक्म

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! वालिदैन से ह़ुस्ने अख़्लाक़ और एह़सान के साथ पेश आना चाहिये जैसा कि क़ुरआने पाक में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴾وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ط﴿ (پ15، بنی اسرائیل:23) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : “और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो।” नीज़ ह़दीसे पाक में है : जो मां बाप को रह़मत की

नज़र से देखता है अल्लाह पाक उसे एक मक़्बूल ह़ज का सवाब अ़ता फ़रमाता है।

(شعب الایمان،6/186،حدیث:7856)

रिश्तेदारों के हुक़ूक़

याद रखिये ! रिश्तेदारों के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं और शैत़ान रिश्तेदारियां कटवाता है जैसा कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّ الشَّیْطٰنَ یَنْزَغُ بَیْنَهُمْ ؕ﴾ (پ15، بنی اسرائیل:53) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक शैत़ान उन के आपस में फ़साद डाल देता है।" देखिये ! शैत़ान आपस में नफ़रतें पैदा करता है लेकिन मोमिन मह़ब्बत का पैग़ाम देता है। इस सिल्सिले में ह़ज़रते सय्यिदुना जलालुद्दीन रूमी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने बड़ी प्यारी बात इरशाद फ़रमाई है :

تُو برائے وَصل کَردن آمدی　نے برائے فَصل کَردن آمدی

यानी तू जोड़ पैदा करने के लिये आया है तोड़ पैदा करने के लिये नहीं आया।

शैत़ानी काम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! लोगों के दरमियान फूट डालना, उन को आपस में लड़वाना और जुदाई डलवाना शैत़ानी काम हैं और हम प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम होने के बावुजूद शैत़ान के पीछे चल पड़े हैं। चूंकि अब सह़ीह़ मानों में सुन्नतों पर कारबन्द और शरीअ़त के रास्ते पर गामज़न न रहे नीज़ हमें शरीअ़त व सुन्नत की मालूमात भी नहीं, न हमें शरीअ़त की पासदारी का एह़सास है, बस येही वज्ह है कि हम में से हर एक अपनी अपनी कहे जाता है और हर एक को सिर्फ़ अपनी फ़िक्र है। देखिये ! शैत़ान भाइयों में भी नाचाक़ी करवाता है और उस की वाज़ेह़ तरीन मिसाल ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام का वाक़िआ है फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام एक मुल्क के अमीर बने और आख़िरेकार जब आप की अपने

भाइयों से मुलाक़ात हुई और उस वक़्त आप عَلَيْهِ السَّلَام ने जो कुछ फ़रमाया उस का बयान पारह 13, सूरए यूसुफ़ की आयत नम्बर 100 में कुछ इस त़रह़ है :

مِنۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِىْ وَ بَيْنَ اِخْوَتِىْ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बाद उस के कि शैत़ान ने मुझ में और मेरे भाइयों में नाचाक़ी करा दी थी।

पता चला शैत़ान भाइयों में फूट डालता है।[1] اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दावते इस्लामी नफ़रतों को मिटाती और मह़ब्बत के चराग़ जलाती है, आइये ! दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हो जाइये, मदनी चराग़ रौशन है, इस से रौशनी ह़ासिल कीजिये और फिर इस रौशनी से अपनी दुनिया, क़ब्र और आख़िरत जगमगाइये।

ऐ आशिक़ाने रसूल ! रिश्तेदारियां काटना बहुत सख़्त गुनाह और ह़राम है और अह़ादीसे मुबारका में इस की बहुत सी वई़दें आई हैं, इ़ब्रत के लिये चन्द वई़दें पेशे ख़िदमत हैं

बारगाहे इलाही में क़राबत की अ़र्ज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब अल्लाह पाक मख़्लूक़ को पैदा कर चुका तो क़राबत (यानी रिश्तेदारी) ने अ़र्ज़ की : ऐ मौला ! मैं तुझ से क़त़ए रेह़मी की पनाह चाहती हूं। अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं कि जिस ने तुझ से तअ़ल्लुक़ जोड़ा मैं उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ूंगा और जिस ने तुझ से तअ़ल्लुक़ ख़त्म किया मैं भी उस के तअ़ल्लुक़ को काट दूंगा। रिश्तेदारी ने अ़र्ज़

---

1 ...एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई भी नबी थे और उ़लमाए किराम ने उन भाइयों के अ़मल की तावील येह की है कि येह सब उन्हों ने ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की मह़ब्बत पाने के लिये किया था। (फ़तावा रज़विय्या, 15/164 मफ़्हूमन)

की : ऐ अल्लाह ! मैं इस पर राज़ी हूं। येह बयान फ़रमाने के बाद नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमाई :

﴿فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ۝﴾ (پ26، محمد:22)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो।"

(بخاری،4/97،حدیث:5987مفہوماً)

ऐ अपने मां बाप से रूठने वालो ! ऐ अपने भाइयों से लड़ने वालो ! ऐ अपनी बहनों से रिश्ता तोड़ने वालो ! ऐ अपनी ख़ालाओं, मामूओं और चचाओं से रिश्ता ख़त्म करने वालो ! अल्लाह पाक के सच्चे कलाम पर अच्छी त़रह़ ग़ौर करो कि अल्लाह पाक रिश्ता काटने वालों पर किस क़दर ग़ज़बनाक है ! याद रखो ! रिश्तेदारियां काटना बहुत सख़्त गुनाह है लिहाज़ा अगर किसी की मां बाप और बहन भाइयों से रिश्तेदारी कटी हुई हो तो उसे चाहिये कि फ़ौरी त़ौर पर उस सिल्सिले को ख़त्म करे और उन से सुल्ह़ कर ले।

दुनिया और आख़िरत में अ़ज़ाब

ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बग़ावत और क़त़ए रेह़मी (यानी रिश्तेदारी काटना) दो ऐसे गुनाह हैं जिन पर दुनिया और आख़िरत में अ़ज़ाब दिया जाता है। (ترمذی،4/229،حدیث:2519)

जन्नत से मेह़रूमी

एक रिवायत में है : रिश्तेदारी काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।

(مسلم،ص1062،حدیث: 6520)

मेह़रूम लोग

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिब्रीले अमीन

عَلَيْهِ السَّلَام पन्दरहवीं शाबान की रात को मेरे पास आए और कहा : आज की रात अल्लाह पाक बनी कल्ब की बकरियों के बालों के बराबर गुनहगारों को बख़्श देता है मगर मुशरिक, कीना परवर (यानी बुग़्ज़ो अ़दावत रखने वाला), क़ात़ेए रेह़म, तकब्बुर से अपने तहबन्द को घसीट कर चलने वाला, वालिदैन का ना फ़रमान और शराबी को नहीं बख़्शता। (شعب الایمان،3/384،حدیث:3837)

क़त़ए रेह़मी करने वाला हमारी मजलिस में न बैठे

एक बार प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कुछ लोग ह़ाज़िर थे तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रिश्तेदारी क़त़अ़ करने वाला हमारी मजलिस में न बैठे, येह सुन कर एक नौजवान वहां से उठा और अपनी ख़ाला के हां चला गया क्यूंकि उस का अपनी ख़ाला से कोई झगड़ा था जिस की उस ने मुआ़फ़ी मांगी और दोनों ने एक दूसरे को मुआ़फ़ कर दिया, फिर वोह नौजवान दोबारा नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस में आ कर बैठ गया तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस क़ौम पर अल्लाह पाक की रह़मत नाज़िल नहीं होती जिस में रिश्तेदारी काटने वाला मौजूद हो।

(الزواجر عن اقتراف الکبائر،2/153)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पहले रिश्तेदारी काटने का सिल्सिला बहुत कम होता था मगर आज कल ह़ालात इस के बिल्कुल बर अ़क्स हैं, अब शायद कोई कोई ऐसा होता होगा जिस की किसी रिश्तेदार से नाराज़ी न हो वरना आ़म त़ौर पर हम में से अक्सर की रिश्तेदारों से नाराज़ी होती है। येही वज्ह है कि आज मुसलमान त़रह़ त़रह़ के मसाइल का शिकार हैं मगर रिश्तेदारी जोड़ने के बजाए दूसरों से गिले शिक्वे करते नज़र आते हैं कि साह़िब ! हमारी दुआ़एं क़बूल नहीं होतीं, पता नहीं कौन सी ख़त़ा हो गई है कि हमारे घर से बीमारी नहीं जाती,

पता नहीं कौन सा गुनाह हो गया है कि तंगदस्ती दूर नहीं होती, हम ने बुज़ुर्गों से दुआएं करवाईं, बड़े बड़े मज़ारात पर हाज़िर हुए, बड़े बड़े वज़ीफ़े किये मगर हमारे मस्अले ह़ल नहीं हुए वग़ैरा वग़ैरा।

देखिये ! अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जिस क़ौम में रिश्तेदारी काटने वाला मौजूद होता है उस पर अल्लाह पाक की रह़मत नाज़िल नहीं होती। (الزواجر عن اقتراف الكبائر، 2/153) जब हम बिला इजाज़ते शरई रिश्तेदारियां ख़त्म करेंगे तो हम पर रह़मत कैसे नाज़िल होगी ? हमारी दुआएं कैसे क़बूल हो पाएंगी ? हमारे मसाइल कैसे ह़ल होंगे ? अल्लाह पाक की रह़मत पाने के लिये हमें अपने रिश्तेदारों से जोड़ पैदा करना होगा और ख़ूब ग़ौर करना होगा कि किस, किस से हमारी नाराज़ी चल रही है ? फिर जिस से हमारी नाराज़ी हो उस से सुल्ह़ करनी होगी, अगर हम ने अपनी त़रफ़ से सुल्ह़ की पूरी कोशिश कर ली लेकिन सामने वाला नहीं मानता तो येह मजबूरी की सूरत है।

मुआफ़ी तलाफ़ी करते वक़्त अड़ी तड़ी और धमकी वाला अन्दाज़ मत इख़्तियार कीजिये मसलन यूं न कहिये कि "मुआफ़ करते हो या नहीं ? मुआफ़ नहीं करते तो कोई मस्अला नहीं" वग़ैरा वग़ैरा। अगर हाथ जोड़ कर, प्यार से, आजिज़ी के साथ, बह़सो मुबाह़सा किये बग़ैर, अपनी ग़लत़ी को मानते हुए मुआफ़ी मांगी जाए तो उम्मीद है सामने वाला नर्म पड़ जाएगा और मुआफ़ कर देगा और अगर मुआफ़ी मांगते वक़्त पुराने मुर्दे उखेड़ना शुरूअ़ कर दिये जाएं या बाल की खाल उतारना शुरूअ़ कर दी जाए मसलन सामने वाले से इस त़रह़ की बातें की जाएं कि "अगर हम ने फ़ुलां बात कही थी तो आप ने भी तो फ़ुलां बात कही थी" या "आप ने हमें अपने घर की तक़रीब में बेदिली से दावत दी थी और बुलाने के लिये किसी को भेजा भी नहीं था और न ही हमारा इन्तिज़ार किया था" या "आप ने फ़ुलां जगह

हमें झाड़ दिया था" वग़ैरा वग़ैरा। याद रखिये ! अगर सुल्ह़ करते वक़्त इस त़रह़ के शिक्वे ले कर बैठेंगे तो हरगिज़ सुल्ह़ नहीं हो पाएगी।

ऐ आशिक़ाने रसूल ! रिश्तेदारी काटने की दो मज़ीद वईदें मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे

क़ात़ेअ़ रेह़म हमारी मह़फ़िल से उठ जाए

एक बार ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस सुना रहे थे तो इरशाद फ़रमाया : हर क़ात़ेअ़ रेह़म हमारी मह़फ़िल से उठ जाए। एक जवान उठ कर अपनी फूफी के हां गया जिस से उस का दो साल पुराना झगड़ा था, जब दोनों एक दूसरे से राज़ी हो गए तो उस जवान से फूफी ने कहा : तुम जा कर इस का सबब पूछो, आख़िर ऐसा क्यूं हुवा ? (यानी सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के एलान की क्या ह़िक्मत है ?) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है, आप ने फ़रमाया : जिस क़ौम में क़ात़ेअ़ रेह़म हो, उस पर अल्लाह पाक की रह़मत का नुज़ूल नहीं होता।

(الادب المفرد، ص26،حدیث:61-63ملتقطاً)

रिश्ता तोड़ने वाले की मौजूदगी में रह़मत नहीं उतरती

सय्यिदुना आमश رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि एक सुब्ह़ ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मह़फ़िल में तशरीफ़ फ़रमा थे तो आप ने लोगों को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : ऐसा शख़्स जो किसी से रिश्तेदारी काट कर बैठा हो मैं उसे अल्लाह की क़सम देता हूं कि वोह हमारी इस मजलिस से चला जाए ताकि हम अल्लाह पाक से मग़्फ़िरत की दुआ़ करें क्यूंकि जब तक वोह बैठा रहेगा उस वक़्त तक हम पर अल्लाह पाक की रह़मत के दरवाज़े बन्द रहेंगे। (معجم کبیر،9/158،حدیث:8793) (यानी अगर वोह यहां मौजूद रहेगा तो हमारी दुआ़ क़बूल न होगी)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुआएं क़बूल न होने के बहुत से अस्बाब में से एक सबब रिश्तेदारियां काटना भी है, आज बहुत से लोग रिश्तेदारी ख़त्म किये हुए हैं और उन्हें इस का कोई एह़सास नहीं बल्कि सितम बालाए सितम येह कि मुआशरे में इस को गुनाह ही नहीं समझा जाता ह़ालांकि रिश्तेदारी काट देना सख़्त गुनाह है। बाज़ लोग नमाज़ें पढ़ते, नफ़्ली रोज़े रखते, तहज्जुद पढ़ते, क़ुरआने पाक की तिलावत करते, चेहरे पर दाढ़ी और सर पर इमामा शरीफ़ सजाते और ज़ुल्फ़ें रखते हैं मगर उन्हों ने ख़ानदान में ख़ूब लड़ाई मचाई होती है। इसी त़रह़ बाज़ लोग मां बाप के सामने "तू तू, मैं मैं" करते हुए आर मह़सूस नहीं करते, मां की आंखों में आंखें डाल कर बात करते हुए उन्हें शर्म मह़सूस नहीं होती, बाप को झाड़ते हुए येह एह़सास नहीं होता कि वोह ग़लत़ कर रहे हैं, अगर बाप किसी मह़फ़िल में आए तो उस से दूर भागते हैं और दोस्त आए तो उसे ख़ुश आमदीद कहते और उस से हंस हंस कर मीठी मीठी बातें करते हैं, ऐसों को याद रखना चाहिये कि मां बाप का दिल दुखाना सख़्त कबीरा गुनाह है। आशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में शरीक होने वाले बाज़ अफ़राद जब वालिदैन के साथ इस त़रह़ का अन्दाज़ अपनाते हैं तो वोह गुनाहगार होने के साथ साथ दावते इस्लामी वालों को बुरा भला कहलवाए जाने का सबब भी बनते हैं।

अगर आप कल तक मां से "तू" कह कर बात चीत करते थे तो अब "आप" कह कर बात चीत किया करें। देखिये ! "तू" की जगह "आप" कहने से न तो ज़बान पर छाले होते हैं और न ही देर लगती है। जहां दोस्त को मुतअस्सिर करने के लिये "आप, जनाब" कह कर जाली अख़्लाक़ का मुज़ाहरा किया जाता है वहीं अगर मां से "आप" कह कर बात चीत की जाए तो उस का दिल ख़ुश हो जाएगा। आशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में

शिर्कत करने वाले इस्लामी भाई अगर घर में अदब वाला अन्दाज़ अपनाएंगे तो उन की "वालिदा" दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से मुतअस्सिर होंगी और दूसरों से कहेंगी : मेरा बेटा अच्छी जगह जाता है क्यूंकि पहले वोह मुझ से "तू" कह कर बात चीत करता था और अब "आप" कह कर बात चीत करता है, पहले जब मैं उसे किसी काम के लिये बुलाती थी तो कहता था "हां आता हूं" और अब "जी अम्मी अभी ह़ाज़िर होता हूं" जैसे अदब वाले अल्फ़ाज़ से जवाब देता है। देखिये ! जब वालिदा सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शरीक होने वाले बेटे का ह़ुस्ने अख़्लाक़ और बात चीत करने का बेहतरीन अन्दाज़ देखेगी तो वोह अपने दूसरे बेटे से कहेगी : बेटा ! जब से तुम्हारा भाई दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शरीक होने लगा है مَاشَآءَاللہ अच्छे सलीक़े से बात चीत करता है लिहाज़ा अब तुम भी शरीक हुवा करो। बहरेह़ाल अगर घर में ह़ुस्ने अख़्लाक़ अपनाया जाए तो اِنْ شَآءَاللہ घर का माह़ौल अच्छा होगा और बहुत से मसाइल ह़ल हो जाएंगे।

औलाद को दीनी माह़ौल से दूर रखने की एक वज्ह

बाज़ जज़्बाती इस्लामी भाई जब कुछ सुन्नतें सीख लेते हैं तो ज़बरदस्ती अपने मां बाप को उन पर अ़मल करवाने की कोशिश करते हैं, बाज़ औक़ात इस वज्ह से भी मां बाप अपनी औलाद को दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से दूर रखते हैं। ऐसे इस्लामी भाइयों से अ़र्ज़ है कि देखिये ! किसी बात पर अ़मल करने का ज़ेहन आहिस्ता आहिस्ता बनता है, आप इतने अ़र्से तक इज्तिमाआ़त में आते रहे और मुबल्लिग़ीन आयतें और ह़दीसें सुना सुना कर आप को समझाते रहे फिर कहीं जा कर रफ़्ता रफ़्ता आप का सुन्नतों पर अ़मल करने का ज़ेहन बना, अब अगर आप एक दम मां बाप से सुन्नतों पर अ़मल करने का मुत़ालबा करेंगे तो वोह नहीं कर पाएंगे।

अगर आप मां बाप को कुछ समझाना चाहते हैं तो इस का बेहतरीन त़रीक़ा येह हैं कि आप उन्हें ऑडियो या वीडियो सुन्नतों भरे बयानात सुनाएं और दिखाएं, नीज़ किसी नेक काम को वालिदैन पर मुसल्लत़ करने के बजाए उस पर ख़ुद अ़मल करते रहें, उन के सामने चिड़चिड़े पन का मुज़ाहरा करने से बचें और उन्हें हरगिज़ न झिड़कें, अगर पहले घर के काम काज कम किया करते थे तो दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता होने के बाद ज़ियादा करना शुरूअ़ कर दें اِنْ شَآءَاللّٰه मां बाप आप से ख़ुश होंगे, घर का माह़ौल अच्छा बनेगा, अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم राज़ी होंगे और आप दीन की ख़िदमत ज़ियादा बेहतर त़रीक़े से अन्जाम देने वाले बन जाएंगे। अगर मां बाप कहें : बेटा ! रात 12 बजे तक घर आ जाना तो आप 11 : 30 तक घर पहुंच जाएं और जल्द सो जाएं इस की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه नमाज़े फ़ज्र के लिये आप की आंख खुल जाएगी और तहज्जुद पढ़ना चाहेंगे तो उठने में आसानी होगी, नीज़ सुब्ह़ काम काज में भी फुरती रहेगी। देखिये ! अगर आप रात दो बजे तक इधर उधर होटलों में गप्पे हांकते रहेंगे और घर वालों से कहेंगे कि हम दावते इस्लामी के दीनी कामों में मसरूफ़ होने की वज्ह से ताख़ीर से घर आते हैं तो ऐसा करने से घर वाले दावते इस्लामी को बुरा भला कहेंगे लिहाज़ा नमाज़े इ़शा पढ़ कर दर्स दीजिये और मद्रसतुल मदीना बालिग़ान पढ़ा कर घर तशरीफ़ ले जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه घर वाले ख़ुश होंगे और आइन्दा सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त वग़ैरा में शिर्कत करने की इजाज़त भी दे देंगे।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने बयान की इब्तिदा में सिलए रेह़मी से मुतअ़ल्लिक़ रिवायात सुनीं मज़ीद चन्द रिवायात पेशे ख़िदमत हैं :

जिस ने मुझे मिलाया अल्लाह पाक उसे मिलाए

"बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़" में है : रिश्तेदारी अ़र्शे ख़ुदा से मुअ़ल्लक़

(यानी लटकी हुई) है और अ़र्ज़ करती है : जिस ने मुझे मिलाया अल्लाह पाक उसे मिलाए (यानी जिस ने रिश्तेदारी को जोड़ा अल्लाह पाक उस को भी जोड़े) और जिस ने मुझ से क़त़ए तअ़ल्लुक़ किया (यानी जिस ने रिश्तेदारी को तोड़ा) अल्लाह पाक भी उस से क़त़ए तअ़ल्लुक़ करे। (مسلم، ص1062، حدیث:6519)

रह़मते ख़ुदावन्दी पाने का ज़रीआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना आप इरशाद फ़रमा रहे थे : अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है कि मैं अल्लाह हूं, मैं रह़मान हूं, मैं ने रह़म को पैदा किया और उसे अपने नाम से मुश्तक़ किया (यानी निकाला), जिस ने सिलए रेह़मी की मैं उसे अपनी रह़मत से मिलाऊंगा और जिस ने क़त़्ए रेह़मी की मैं उसे अपनी रह़मत से दूर कर दूंगा। (ترمذی،3/363،حدیث:1914)

सिलए रेह़मी येह है कि वोह तोड़े तब भी तुम जोड़ो

"बुख़ारी शरीफ़" में है : सिलए रेह़मी येह नहीं कि मिलने जुलने वाले रिश्तेदारों से मेल जोल बरक़रार रखे (यानी जो रिश्तेदार अच्छे तअ़ल्लुक़ात रखता हो उस से अच्छे तअ़ल्लुक़ात रखे) बल्कि सिलए रेह़मी येह है कि जो रिश्तेदार तअ़ल्लुक़ात ख़त्म कर चुके हों उन से भी मेल जोल बरक़रार रखे।

(بخاری،4/98،حدیث:5991)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक में कितनी ज़बरदस्त बात बताई गई है कि जो हम से रिश्ता काटे और नफ़रत करे हमें उस से भी जुड़ जाना चाहिये, कहीं रास्ते में मिल जाए तो हम उसे सलाम करें, अपने हां कोई तक़रीब हो तो उसे ज़रूर दावत पहुंचाएं अगर्चे वोह न आए लेकिन हम अपनी त़रफ़ से उस के साथ सिलए रेह़मी से पेश आएं।

उन लोगों में से न बनो

“तिरमिज़ी शरीफ़” की ह़दीसे पाक में है : उन लोगों में से न बनो जो कहते हैं कि अगर लोग हमारे साथ भलाई करेंगे तो हम भी उन के साथ भलाई करेंगे और अगर वोह ज़ियादती करेंगे तो हम भी ज़ियादती करेंगे बल्कि तुम इस बात के आ़दी बनो कि अगर लोग तुम्हारे साथ भलाई करें तो भलाई करो, अगर वोह ज़ियादती करें तो तुम ज़ियादती न करो। (ترمذی،3/405، حدیث:2014)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस ह़दीसे पाक से पता चला कि हमें ईंट का जवाब पत्थर से नहीं देना चाहिये बल्कि रिश्तेदार हमारे साथ चाहे कितना ही बुरा सुलूक करें हमें अपनी त़रफ़ से हुस्ने सुलूक का दरवाज़ा बन्द नहीं करना। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

वोह जफ़ा करते रहे हम वफ़ा करते रहे   अपने अपने फ़र्ज़ को दोनों अदा करते रहे

अल्लाह पाक तेरा ह़ामी व नासिर होगा

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़ता हूं मगर वोह मुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़ते हैं, मैं उन से भलाई करता हूं वोह मेरी बुराई करते हैं, मैं उन से नर्मी और ह़िल्म व बुर्दबारी का सुलूक करता हूं मगर वोह मुझे किसी ख़ात़िर में नहीं लाते। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर तेरी बातें सच्ची हैं तो तू ने एक दूर दराज़ रास्ते को त़ै कर लिया और जब तक तू अपनी इस आ़दत पर क़ाइम रहेगा तो अल्लाह पाक तेरा ह़ामी व नासिर होगा।

(مسلم،ص1062،حدیث:6525ماخوذاً)

सब से बेहतरीन सदक़ा

एक ह़दीसे पाक में है : सब से बेहतरीन सदक़ा कीना परवर रिश्तेदार को कुछ देना है। (مستدرک،2/27،حدیث:1515)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पता चला जो रिश्तेदार हम से नफ़रत करता है उसे कुछ अ़ता करना सब से बेहतरीन सदक़ा है लेकिन जो हमारी तारीफ़, ख़ुशामद और वाह वा करे हम उसे तो नवाज़ते रहते हैं और जो हमारी तौहीन करता और मज़ाक़ उड़ाता है उस से मुंह मोड़ लेते हैं।

क़ियामत के रोज़ ह़िसाब में आसानी

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस में तीन सिफ़ात पाई जाएंगी क़ियामत के रोज़ उस का ह़िसाब इन्तिहाई आसान होगा और उस का ठिकाना जन्नत होगा। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह तीन सिफ़तें कौन सी हैं ? इरशाद फ़रमाया : जो तुझे मह़रूम रखे तू उसे दिये जा, जो तुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़े तू उस से जोड़े जा और जो तुझ पर ज़ुल्म करे तू उसे मुआ़फ़ करता रहे।

(مستدرک،3/362،حدیث:3968ملتقطاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रिश्तेदारी काटना ह़राम है। अगर कोई रिश्तेदार हम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तब भी हमें येही हुक्म है कि हम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ें। अगर हम कोशिश के बावुजूद अपनी ज़िन्दगी में किसी टूटे हुए रिश्ते को जोड़ने में नाकाम रह जाएं तो हमारी मेह़नत ज़ाएअ़ नहीं होगी क्यूंकि ऐसा करने से अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम से राज़ी हो जाएंगे और येही हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद है। याद रखिये ! अगर्चे सारा ज़माना हम से रूठ जाए लेकिन रब्बे करीम राज़ी हो जाए तो ख़ैर ही ख़ैर है। अगर किसी रिश्तेदार से तअ़ल्लुक़ रखना हो तो मह़ज़ अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये रखें और अगर किसी रिश्तेदार में कोई ख़राबी हो तो उस की सोह़बत से बचें, उस के बुरे फ़ेल से

नफ़रत करें और उस में जो बुराई पाई जाती है सिर्फ़ उसे बुरा समझें मगर उस की ज़ात से बिगाड़ पैदा न करें मसलन कोई दाढ़ी मुन्डाता है तो उस के दाढ़ी मुन्डाने को बुरा समझें लेकिन अपने दिल में उस की ज़ात के ह़वाले से बुग़्ज़ो कीना न रखें अलबत्ता क़रीबी अ़ज़ीज़ या रिश्तेदार होने की वज्ह से उस की ऐसी मह़ब्बत भी दिल में न हो कि उस का दाढ़ी मुन्डाने जैसा फ़ेल अच्छा मालूम होने लगे। इसी त़रह़ अगर कोई रिश्तेदार रिश्वत लेता है या सूद खाता है या फ़िल्में ड्रामे देखता है तो हम उस के इन अफ़्आ़ल को बुरा समझें लेकिन दिल में उस के बारे में बुग़्ज़ो कीना न पालें। आज कल बहुत से लोग अपनी ज़ात की ख़ात़िर दूसरों से बुग़्ज़ो कीना रखते और लड़ते झगड़ते हैं न कि किसी गुनाह के सबब मसलन कोई किसी से इस लिये नफ़रत नहीं करता कि वोह नमाज़ नहीं पढ़ता या फ़िल्में ड्रामे देखता है बल्कि इस लिये नफ़रत करता और लड़ता झगड़ता है कि उस ने इस की बात नहीं मानी होती या सब के सामने उसे झाड़ा होता है या किसी तक़रीब की दावत नहीं दी होती वग़ैरा। आज कल दामाद, सुसराल वालों को अपना नौकर समझता है और चाहता है कि हर तक़रीब में उसे दावत दी जाए और लेने के लिये गाड़ी भी भेजी जाए वरना आने में नख़रे करता है या फिर आता ही नहीं, यूं रिश्तेदारियों में नख़रे पाए जाते हैं और उन नख़रों की वज्ह से ख़ानदान के ख़ानदान उजड़ जाते हैं। अल्लाह पाक हमारे ह़ाल पर रह़म फ़रमाए और हमें अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़मी से पेश आने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मह़रूम लोग	9
क़त़ए रेह़मी की सज़ा (ह़िकायत)	1	क़त़ए रेह़मी करने वाला हमारी मजलिस में न बैठे	10
आग की शाख़ों से लटके हुए लोग	6	क़ात़ेए रेह़म हमारी मह़फ़िल से उठ जाए	12
वालिदैन की रिज़ा के बग़ैर अ़ज़ाब दूर न होगा	6	रिश्ता तोड़ने वाले की मौजूदगी में रह़मत नहीं उतरती	12
वालिदैन का नाफ़रमान ग़ज़बे इलाही का शिकार होगा	6	औलाद को दीनी माह़ौल से दूर रखने की एक वज्ह	14
वालिदैन से हुस्ने अख़्लाक़ का हुक्म	6	जिस ने मुझे मिलाया अल्लाह पाक उसे मिलाए	15
रिश्तेदारों के ह़ुक़ूक़	7	रह़मते ख़ुदावन्दी पाने का ज़रीआ	16
शैत़ानी काम	7	उन लोगों में से न बनो	17
बारगाहे इलाही में क़राबत की अ़र्ज़	8	अल्लाह पाक तेरा ह़ामी व नासिर होगा	17
दुनिया और आख़िरत में अ़ज़ाब	9	सब से बेहतरीन सदक़ा	17
जन्नत से मह़रूमी	9	क़ियामत के रोज़ ह़िसाब में आसानी	18

अगले हफ़्ते का रिसाला

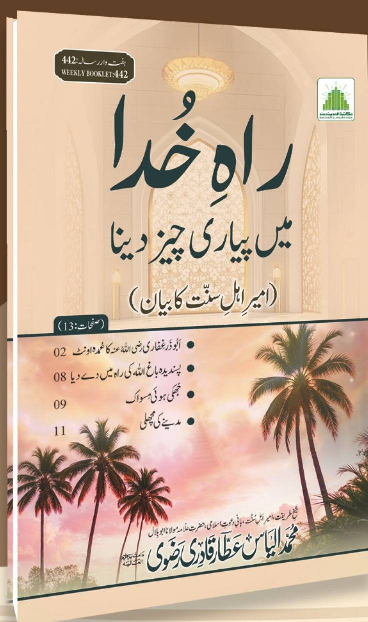

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025